8

मसीह आ रहा है!

बाइबल पाठ #1

I. अपनी सेवकाई से पूर्व मसीह के जीवन का काल।
   क. लूका की भूमिका और समर्पण (लूका 1:1-4)।
   ख. यूहन्ना में परिचय (यूहन्ना 1:1-18)।
   ग. मत्ती में यीशु की वंशावली (मत्ती 1:1-17)।
   घ. लूका में यीशु की वंशावली (लूका 3:23-38)।
   ड. यूहन्ना बपस्तिमा देने वाले के जन्म की जकरयाह के पास स्वर्गदूत द्वारा घोषणा (लूका 1:5-25)।
   च. यीशु के जन्म की मरियम के पास स्वर्गदूत द्वारा घोषणा (1:26-38)।
   छ. मरियम (यीशु की होने वाली मां) का इलिशबा (यूहन्ना बपस्तिमा देने वाले की होने वाली मां) के पास जाना (लूका 1:39-56)।
   ज. यूहन्ना बपस्तिमा देने वाले का जन्म और प्रारम्भिक जीवन (लूका 1:57-80)।

परिचय (लूका 1:1-4)

सुसमाचार के अपने वृत्तांत के परिचय में लूका ने लिखा है, ''... मुझे भी यह उचित मालूम हुआ कि उन सब बातों [अर्थात मसीह के जीवन] का सम्पूर्ण हाल ... तेरे लिए क्रमानुसार लिखूं। कि तू जान ले, कि वे बातें, जिनकी तू ने शिक्षा पाई है, कैसी अटल हैं'' (आयतें 3, 4)।[1] हमारे इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यीशु के बारे में ''ठीक-ठीक'' जानने में आपकी सहायता करना है। हमारा पहला पाठ सुसमाचार के वृत्तांतों का परिचय ही है, जिनमें उसके जन्म का पूर्वाभास है। इस पाठ का शीर्षक है ''मसीह आ रहा है!''

पूर्व-अस्तित्व पर ज़ोर दिया गया (यूहन्ना 1:1-18)[2]

मसीह के जीवन पर विचार करते हुए हम साधारणतया बैतलहम में उसके जन्म से ही आरम्भ करते हैं। यूहन्ना चाहता था कि उसके पाठकों को यह पता चल जाना चाहिए कि यीशु का अस्तित्व जन्म की उस घटना से बहुत पहले से था। वह तो संसार की सृष्टि से भी पहले था, क्योंकि वास्तव में वह, परमेश्वर ही है:

> आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा[3] उत्पन्न हुआ और जो कुछ

उत्पन्न हुआ है, उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न नहीं हुई (यूहन्ना 1:1-3)।

यीशु ''परमेश्वरत्व'' के तीन ईश्वरीय व्यक्तित्वों में से एक है (प्रेरितों 17:29; रोमियों 1:20; कुलुस्सियों 2:9)। मत्ती 28:19 में तीनों को पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा कहा गया है। यह तथ्य कि यीशु परमेश्वर है, समझना आसान नहीं है। ''परमेश्वर'' शब्द का इस्तेमाल करते हुए सामान्यतया परमेश्वर पिता की ही बात कर रहे होते हैं। अभी के लिए अपने मन में यह विचार करें कि यीशु परमेश्वर, पुत्र है। इस शृंखला में आगे यीशु के ईश्वरीय होने के बारे में और विस्तार से चर्चा की जाएगी।

पुनः, यीशु के बारे में विचार करते हुए साधारणतया हम उसे ''यीशु'' नाम या ''मसीह'' ठहराए जाने के रूप में ही देखते हैं। परन्तु स्वर्गदूत ने यूसुफ को मरियम की कोख से पुत्र जनने की बात बताते हुए कहा था कि ''तू उसका नाम यीशु *रखना;*'' (मत्ती 1:21)। जहां तक ''मसीह'' या ''ख्रीस्तुस'' (''अभिषिक्त'') पदनाम की बात है, तो यीशु के बपतिस्मा लेने पर (मत्ती 3:13-17) परमेश्वर ने उसका आत्मा से अभिषेक किया था। (लूका 4:18; प्रेरितों 10:38)। पृथ्वी पर यीशु की सेवकाई से *पूर्व* उस का नाम क्या था?[4]

यूहन्ना ने कहा कि मनुष्य के रूप में आने से पूर्व यीशु *लोगोस*[5] अर्थात ''शब्द या वचन'' था। मसीह के रूप में पृथ्वी पर परमेश्वर का वचन देहधारी होकर आया। यूहन्ना ने 1:18 में लिखा है, ''परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा, एकलौता पुत्र जो पिता की गोद में है, उसी ने उसे प्रकट किया।'' यीशु ने अपनी शिक्षा तथा नमूना देकर परमेश्वर ''को प्रकट किया।'' उसने फिलिप्पुस को बताया था ''... जिस ने मुझे देखा है उस ने पिता को देखा है ...'' (यूहन्ना 14:9)।

यूहन्ना की पुस्तक के परिचय का सोचने पर विवश करने वाला भाग आयत 14 है: ''और वचन देहधारी हुआ; और ... हमारे बीच में डेरा किया ...।'' हम इसे ''देहधारी हुआ'' कहते हैं (एक लातीनी वाक्यांश से जिसका अर्थ ''शरीर की तरह बनाना''[6] है)। देहधारी होने के बारे में बाइबल का उत्कृष्ट वाक्य फिलिप्पियों 2:5-8 है। मनुष्य के रूप में उसके आने के हर रहस्य को हम नहीं समझ सकते, परन्तु विश्वास से हम इस महान सच्चाई को स्वीकार करते हैं कि ''वचन देहधारी हुआ।'' इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने लिखा है:

> ... उस को चाहिए था, कि सब बातों में अपने भाइयों के समान बने; जिससे वह उन बातों में, जो परमेश्वर से सम्बन्ध रखती हैं, एक दयालु और विश्वासयोग्य महायाजक बने ... क्योंकि जब उसने परीक्षा की दशा में दुख उठाया, तो वह उनकी भी सहायता कर सकता है, जिनकी परीक्षा होती है (इब्रानियों 2:17, 18)।

अपने परिचय में यूहन्ना को और भी कुछ कहना था। (1) यीशु ज्योति (प्रकाश का स्रोत) है (आयतें 4, 5, 9; आयतें 16-18 भी देखें)।[7] (2) यीशु के अग्रदूत ने ज्योति की

गवाही दी (आयतें 6-8, 15)। (3) अन्धकार में डूबे संसार ने ज्योति को नकार दिया (आयतें 5, 10, 11)। (4) कुछ ही लोगों ने ज्योति को ग्रहण किया-विश्वास तथा आत्मिक जन्म के द्वारा[8] (आयतें 12, 13)। परन्तु इस समय हमारा ध्यान मसीह के पूर्व-अस्तित्व की वास्तविकता पर ही केन्द्रित रहेगा है।

भविष्यवाणियां पूरी हुई (मत्ती 1:1-17; लूका 3:23-38)

मत्ती द्वारा दी गई वंशावली (मत्ती 1:1-17)

मत्ती की पुस्तक में लूका और यूहन्ना की पुस्तकों की तरह औपचारिक भूमिका नहीं दी गई है। बल्कि मत्ती ने तुरन्त यह ज़ोर दिया कि यीशु ही वह मसीहा था, जिसकी राह यहूदी लोग देख रहे थे। उसने आरम्भ करते हुए लिखा, ''इब्राहीम की सन्तान, दाऊद की सन्तान यीशु मसीह की वंशावली'' (आयत 1)। केन गायर का कहना था, ''सुसमाचार के अपने मुखचित्र के रूप में मत्ती एक वंश-वृक्ष रखता है। उस वृक्ष की जड़ें इस्राएल के सबसे महान पुरखे इब्राहीम और इसके महान राजा दाऊद में से हैं।''[9] पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के अनुसार मसीह ने अब्राहम की सन्तान (उत्पत्ति 22:18; देखें गलतियों 3:16) और दाऊद की भी सन्तान होना था (देखें 2 शमूएल 7:16; यूहन्ना 7:42)।

इसलिए मत्ती ने अब्राहम से आरम्भ कर (आयत 2) दाऊद से होते हुए (आयतें 6, 7) यीशु तक वंश-वृक्ष बनाया। उसकी सूची को (1) अब्राहम से दाऊद, (2) दाऊद से बन्दी होकर जाने और (3) बन्दी होकर पहुंचाए जाने से यीशु तक चौदह-चौदह नामों से तीन भागों में बांटा गया है (आयत 17)।[10] पहले विभाजन के चौदह नामों में दाऊद का नाम है और दूसरे विभाजन के चौदह नामों में भी उसका नाम शामिल है। दाऊद के नाम का दो बार आना सम्भवतया परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए उसके योगदान को स्वीकार करना है।

मत्ती 1:1-17 तब तक नामों की एक व्यर्थ सूची ही लगती है, जब तक आप समय निकालकर इन नामों को पुराने नियम में नहीं देखते। एफ. लेगर्ड स्मिथ ने इस बारे में कहा है:

> मत्ती द्वारा दी गई वंशावली में कई सुखद आश्चर्य हैं। यीशु की मूल जड़ों में अब्राहम और दाऊद जैसे प्रसिद्ध धर्मी लोग ही नहीं, बल्कि कई ऐसे लोग भी हैं जो इतिहास में, विशेषतया अधर्मियों के रूप में मिलते हैं, जिनमें दुष्ट राजा मनश्शै भी है। जैसा कि अपेक्षा होगी केवल यहूदी ही नहीं, बल्कि एक कनानी और एक मोआबिन समेत जिनके अपने ही लोग परमेश्वर के लोगों के शत्रु रहे हैं इस सूची में हैं। उस समय की उनकी सामाजिक स्थिति के दृष्टिकोण में आदमियों के साथ-साथ स्त्रियों का नाम होना भी कुछ अजीब लगता है। इसके अलावा कम से कम दो स्त्रियों को तो उनके पापों के लिए, जो उन्होंने किए थे, जाना जाता है।[11]

मत्ती की सूची में कुछ लोग तो बहुत ही महान थे, जबकि कुछ इतने महान नहीं थे और कुछ (ईमानदारी से) घृणा योग्य थे। जैसे गायर ने अवलोकन किया है, ''उद्धारकर्ता के वंश-वृक्ष में, झुकी हुई डालियों तथा टूटी हुई शाखाओं के पेड़ों पर सुखाने वाला रोग और निष्फल होना, दोनों लगे थे।''[12] यदि हमें इस बात का प्रमाण चाहिए कि परमेश्वर मनुष्यजाति की निर्बलता (और ज़िद्दी होने) के बावजूद अपना उद्देश्य पूरा कर सकता है, तो मत्ती द्वारा दी गई वंशावली में यह प्रमाण बड़ी उदारता से दिया गया है!

लूका द्वारा दी गई वंशावली (लूका 3:23-38)

लूका ने भी वंशावली की सूची दी है, परन्तु यह उसकी पुस्तक के आरम्भ में नहीं, बल्कि अध्याय 3 में मिलती है और उसका उद्देश्य मत्ती द्वारा दी गई सूची से अलग है। मत्ती की वंशावली की सूची अब्राहम से आरम्भ होकर (मत्ती 1:1, 2) यहूदियों के साथ यीशु के सम्बन्ध को दिखाती है। लूका द्वारा दी गई वंशावली का सांसारिक भाग आदम के साथ समाप्त होता है (लूका 3:38) और संसार के सब लोगों के साथ यीशु के सम्बन्ध को दिखाता है।

यीशु की वंशावली के सम्बन्ध में मत्ती और लूका के वृत्तांत पूरी तरह से अलग-अलग हैं। दोनों दिखाते हैं कि यीशु अब्राहम (मत्ती 1:2; लूका 3:34) और दाऊद (मत्ती 1:6; लूका 3:31) की सन्तान हैं, परन्तु दूसरे अधिकतर नाम दोनों सूचियों में भिन्न हैं।[13]

इन भिन्नताओं के बारे में अलग-अलग सुझाव दिए गए हैं। सबसे सरल और शायद सबसे अच्छा सुझाव यह है कि मत्ती *यूसुफ*[14] के द्वारा यीशु की *कानूनी* वंशावली के बारे में बताता है, जबकि लूका *मरियम* के द्वारा यीशु की *शारीरिक* वंशावली।[15] यह निष्कर्ष यूसबियुस (लगभग 260-340 ई.) तक के मसीही लेखों में भी पाया जाता है।[16] यह विचार यूसुफ के दृष्टिकोण से मसीह के जन्म पर मत्ती के ज़ोर देने से (मत्ती 1:18-25; 2:13-15, 19-23) और मरियम के दृष्टिकोण से यीशु के जन्म पर लूका के ज़ोर देने (लूका 1:26-56; 2:1-20 [नोट 2:19]) से मेल खाता है। यह मत्ती के यहूदी ज़ोर और लूका के यूनानी ज़ोर से भी मिल जाता है।[17]

इस विचार में मुख्य कठिनाई यही है कि लूका के द्वारा दी वंशावली में मरियम का उल्लेख नहीं है।[18] परन्तु ध्यान दें कि पवित्र शास्त्र के कहने का अर्थ यह है कि लूका यह संकेत देकर कि यीशु यूसुफ का वास्तविक पुत्र नहीं था (''जैसे समझा जाता था, यूसुफ का पुत्र'') यूसुफ के द्वारा यीशु की वंशावली नहीं दे रहा था। यदि यूसुफ के द्वारा नहीं तो फिर किसके द्वारा? इसका सीधा सा उज़र है कि लूका मरियम के द्वारा यीशु की परिवार रेखा के बारे में बता रहा था। ''जैसे समझा जाता था, यूसुफ का पुत्र'' को सम्भवतया ''एली का पुत्र'' जिसका अर्थ यीशु यूसुफ का पुत्र नहीं, के शब्दों के साथ, कोष्ठक के रूप में माना जाना चाहिए। ए. टी. रॉबर्टसन ने लिखा है, ''यीशु हेली का[19] नाती होगा, जिसका अर्थ 'पुत्र' ही माना जा सकता है।''[20]

इस प्रकार मत्ती ने ज़ोर दिया कि यीशु सांसारिक तौर पर या कानूनी तौर पर दाऊद की सन्तान था, जबकि लूका ने इस बात पर ज़ोर दिया कि यीशु दाऊद के वंश से था। मत्ती ने

दाऊद के पुत्र राजा सुलैमान से आरम्भ किया, जबकि लूका ने दाऊद के पुत्र नातान के द्वारा वंशावली का वर्णन किया (2 शमूएल 5:14)। रेखाचित्र से इन दोनों परिवार रेखाओं की समझ आ जाती है। यदि वंशावली की इन दोनों सूचियों में ज़रुब्बाबिल वही आदमी है तो ये पंक्तियां बीच में मिल कर फिर अलग हो सकती हैं।[21]

सुसमाचार की पुस्तकों में दी गई इन दोनों वंशावलियों से कोई संदेह नहीं रहता कि 2 शमूएल 7:16 की भविष्यवाणी पूरी हो चुकी थी।

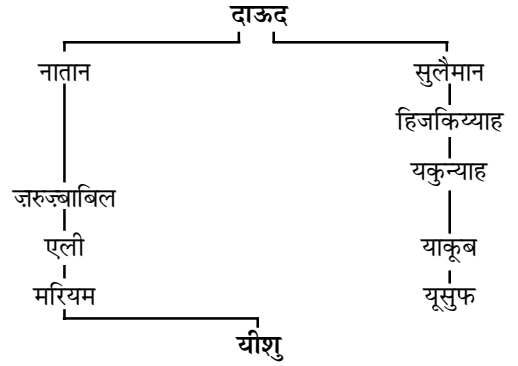

दाऊद से यीशु की वंशावली

प्रतिज्ञाएं की गईं (लूका 1:5-38)

लूका की पुस्तक में मसीह के आने के तुरन्त बाद होने वाली घटनाओं का सम्पूर्ण विवरण है। लूका ने की गई प्रतिज्ञाओं का दो कहानियों के साथ परिचय दिया।

जकर्याह से प्रतिज्ञा (आयतें 5-25)

पहली प्रतिज्ञा जकर्याह नामक एक याजक के साथ यरूशलेम मन्दिर में की गई थी।

जकर्याह यरूशलेम के दक्षिण पश्चिम के एक पहाड़ी क्षेत्र में रहता था। उसकी पत्नी इलिशबा भी हारून की सन्तान थी।[22] दोनों धर्मी और परमेश्वर का भय मानने वाले थे। उनके जीवन में एक ही गड़बड़ी थी कि वे दोनों नि:सन्तान बूढ़े हो गए थे (आयत 7)।

याजकों का काम चौबीस भागों में बांटा गया था (1 इतिहास 24:1-19)। जकर्याह अबिय्याह के ग्रुप में था (लूका 1:5; देखें 1 इतिहास 24:10)। मन्दिर में सेवा के लिए याजकों की बारी लगती थी, जो सप्ताह में एक ही बार आती थी। हर सप्ताह मन्दिर के काम के लिए पर्चियां डाली जाती थीं (लूका 1:9)। हर किसी की इच्छा उस वेदी पर, जो परम पवित्र स्थान को ढांपने वाले पर्दे के सामने थी, धूप जलाने की होती थी। साधारण याजक उस पवित्र जगह के केवल इतना ही निकट जा सकता था। यह जीवन में एक ही बार प्राप्त होने वाला सम्मान था।

कहानी के आरम्भ में, मन्दिर में सेवा के लिए जकर्याह की बारी थी और उसे धूप जलाने का सुअवसर प्राप्त हुआ था। पवित्र स्थान में जाते समय वह अवश्य सोच रहा होगा कि यह उसके लिए कितना महान दिन है। परन्तु आज का दिन तो उससे भी खास दिन होना था, जिसका उसे अनुमान भी नहीं था–ज़्योंकि परमेश्वर के स्वर्गदूत जिब्राइल[23] ने उसे दर्शन दिया।

परमेश्वर के दूत[24] ने इस बुज़ुर्ग याजक को बताया कि इलिशबा की कोख से एक बेटे का जन्म होगा (आयत 13)।[25] इस पुत्र ने, जिसका नाम यूहन्ना होना था, मसीहा के अग्रदूत के रूप में ''एलिय्याह की आत्मा और सामर्थ में'' आना था (आयत 17[26])। याजक को स्वर्गदूत की बातों पर विश्वास नहीं हुआ (आयतें 18, 20)। एक चिह्न व अपने अविश्वास के दण्ड के रूप में जकर्याह ने बोलने में असमर्थ होना था (आयत 20)।

सप्ताह की अपनी सेवा पूरी करने के बाद, जकर्याह घर लौट गया (आयत 23)। स्वर्गदूत की भविष्यवाणी के अनुसार शीघ्र ही उसकी पत्नी गर्भवती हो गई (आयत 24)। याजक को यह समझ होनी आवश्यक थी, और हमें भी कि ''जो वचन परमेश्वर की ओर से होता है, वह प्रभावरहित नहीं होता'' (आयत 37)।

मरियम को प्रतिज्ञा (आयतें 26-38)

पहली प्रतिज्ञा पलिश्तीन में सबसे पवित्र नगर में की गई थी; जबकि दूसरी प्रतिज्ञा सबसे तुच्छ माने जाने वाले नगर में (यूहन्ना 1:46)।

जब इलिशबा को गर्भवती हुए लगभग छह महीने हो गए (आयतें 26, 36),[27] तो जिब्राइल ने गलील के एक छोटे से गांव नासरत की एक युवती को दर्शन दिया।[28] यह युवती ''जिसकी मंगनी यूसुफ नाम दाऊद के घराने के एक पुरुष से हुई थी'' एक ''कुंवारी'' थी और उस ''का नाम मरियम था'' (आयत 27)।

यूनानी शब्द के अनुवाद ''मंगनी'' का अर्थ वह प्रबन्ध नहीं था, जिसे हममें से अधिकतर लोग सगाई के रूप में जानते हैं। यहूदी लोगों के विवाह के दो चरण होते थे: पहला समर्पण का एक समारोह (जिसे ''मंगनी'' कहा जाता था [मत्ती 1:18]) और फिर किसी समय,[29] वास्तविक विवाह होता था। पहले समारोह से दूल्हा-दुल्हन आपस में कानूनी तौर पर पति-पत्नी के रिश्ते में बन्ध जाते थे, यद्यपि उनका विवाह नहीं हुआ होता था। मरियम कानूनी तौर पर यूसुफ से बन्धी हुई थी, लेकिन आधिकारिक तौर पर अभी उनका विवाह नहीं हुआ था।[30]

स्वर्गदूत ने मरियम को बताया, ''और देख, तू गर्भवती होगी, और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा; तू उसका नाम यीशु रखना'' (आयत 31)। ''यीशु'' इब्रानी नाम ''यहोशू'' का यूनानी रूप है, जो उस नाम, जिसका अर्थ ''यहोवा उद्धार करता है'' या ''यहोवा उद्धार है'' का रूप है। उस समय यह एक प्रचलित नाम था,[31] परन्तु अपनी उपयोगिता के कारण मरियम के पुत्र के लिए यही नाम चुना गया था (देखें मत्ती 1:21)।

जकर्याह के विपरीत, मरियम को यह विश्वास करने में कोई कठिनाई नहीं हुई कि

स्वर्गदूत की प्रतिज्ञा पूरी *होगी* (लूका 1:45)। परन्तु उसके मन में यह प्रश्न अवश्य था कि यह सब होगा *कैसे*:

> मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, यह ज़्योंकर होगा? मैं तो पुरुष को जानती ही नहीं।[32] स्वर्गदूत ने उस को उज़र दिया; कि पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परमप्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी, इसलिए वह पवित्र जो उत्पन्न होने वाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा (आयतें 34, 35)।

कुंवारी से जन्म की बाइबल की शिक्षा को पूरी तरह से समझना हमारी समझ से बाहर है, परन्तु विश्वास से हम इसे मानते हैं। कुछ लोग यह शिक्षा देते हैं कि कुंवारी से जन्म की बात पर विश्वास करो या न करो, इससे फर्क नहीं पड़ता। जॉन फ्रैंज़्लिन कार्टर ने कुछ कारण बताए हैं कि हमारे विश्वास के लिए इस शिक्षा का ज़्या महत्व है:[33]

(1) ज़्योंकि नया नियम कुंवारी से यीशु के जन्म की शिक्षा देता है, इसलिए कुंवारी से जन्म की शिक्षा से इनकार करना बाइबल के परमेश्वर की प्रेरणा से होने से इनकार करना ही है।

(2) ज़्योंकि कुंवारी से जन्म ''परमेश्वर के देहधारी होने'' का एक अभिन्न अंग था, इसलिए कुंवारी से जन्म का इनकार यीशु की ईश्वरीयता का नाश करता है।

(3) ज़्योंकि कुंवारी से जन्म की बात यीशु के परमेश्वर होने से जुड़ी है, इसलिए कुंवारी से जन्म का इनकार करने का अर्थ यीशु की मृत्यु की प्रभावशाली शज़्ति से इनकार करना ही है। किसी नाशवान मनुष्य की मृत्यु दूसरे सब नाशवान मनुष्यों के पापों का प्रायश्चित कैसे हो सकती है?

(4) ज़्योंकि कुंवारी से जन्म की बात यीशु के जीवन में होने वाले आश्चर्यकर्मों में सबसे पहला था, इसलिए कुंवारी से जन्म का इनकार करना दूसरे आश्चर्यकर्मों को, जिनमें पुनरुत्थान का आश्चर्यकर्म भी शामिल है, न मानना है। अविश्वास कुंवारी से जन्म से इनकार करने की जड़ और फल दोनों है।

स्तुति की गई (लूका 1:39-56)[34]

जिब्राइल ने बताया कि परमेश्वर मरियम की रिश्तेदार इलिशबा के पास भी गया था और उसकी यह रिश्तेदार गर्भवती थी। स्वर्गदूत के दर्शन के थोड़ी देर बाद ही, मरियम नगर में दक्षिण की ओर 70-80 मील तक गई, जहां जकर्याह और इलिशबा दोनों रहते थे (आयतें 39, 40)। उसने सोचा होगा कि उसकी रिश्ते की बहन ही, यह समझ सकती है कि उसके साथ ज़्या हो रहा है।

इलिशबा ने मरियम की प्रशंसा की (आयतें 41-45)

यह कैसी मुलाकात होगी, जिसमें दो स्त्रियों को जिनमें एक बूढ़ी और एक अभी लड़की ही थी, को परमेश्वर के हाथ ने स्पर्श किया था! इलिशबा मरियम को देखते ही

मरियम की प्रशंसा करने लगी: ''और उस ने बड़े शब्द से पुकार कर कहा, तू स्त्रियों में धन्य है, और तेरे पेट का फल धन्य है'' (आयत 42)।

मरियम ने परमेश्वर की स्तुति की (आयतें 46-56)

प्रत्युत्तर में मरियम ने प्रभु की स्तुति की। उसने यह अनुमान लगाते हुए कि परमेश्वर भविष्य में भी बड़े-बड़े काम करेगा, अतीत में अपने साथ किए गए परमेश्वर के बड़े-बड़े कामों के बारे में बताया।[35]

तीन माह तक इलिशबा के जनने के दिन पूरे होने तक मरियम यहूदिया में ही रही। फिर वह अपने घर नासरत में चली गई।[36]

एक भविष्यवक्ता दिया गया (लूका 1:57-80)

यूहन्ना का जन्म (आयतें 57-79)।

जकर्याह और इलिशबा के बच्चे के जन्म पर पड़ोसी और रिश्तेदार उनके साथ आनन्द मनाने के लिए इकट्ठे हुए।

यहूदी व्यवस्था के अनुसार लड़का होने पर आठवें दिन उसका खतना किया जाता था (लैव्यव्यवस्था 12:3)। नवजात बच्चे के खतने के समारोह में परिवार के लोगों ने उसका नाम उसके पिता के नाम पर ''जकर्याह'' रखने का सुझाव दिया,[37] इलिशबा (जिसे स्वर्गदूत की बातें पता थीं) ने कहा, ''नहीं; वरन उसका नाम यूहन्ना रखा जाए'' (आयत 60)। उन्होंने जकर्याह से भी आग्रह किया, लेकिन उसने नाम की पसन्द के लिए इलिशबा की हां में हां मिलाई। ''तब उसका मुंह और जीभ तुरन्त खुल गई; और वह बोलने और परमेश्वर का धन्यवाद करने लगा'' (आयत 64)।

68 से 79 आयतों में बुज़ुर्ग याजक के परमेश्वर की प्रेरणा से दिए गए शब्द मिलते हैं। 68 से 75 आयतें अपने लोगों के लिए उसकी प्रतिज्ञाओं के कारण परमेश्वर की महिमा हैं, जबकि 76 से 79 आयतें उसके पुत्र के लिए हैं। उसने नन्हे यूहन्ना से कहा, ''और तू हे बालक, परमप्रधान का भविष्यवक्ता कहलाएगा, क्योंकि तू प्रभु के मार्ग तैयार करने के लिए उसके आगे चलेगा'' (आयत 76)। स्वर्गदूत की तरह ही जकर्याह ने मसीहा के अग्रदूत के आने के बारे में मलाकी नबी से उद्धृत किया।

यूहन्ना का प्रारम्भिक जीवन (आयत 80)

आयत 80 यूहन्ना के पहले तीस या अधिक वर्षों का एक संक्षिप्त सा रेखाचित्र देती है: ''और वह बालक बढ़ता और आत्मा में बलवंत होता गया और इस्राएल पर प्रगट होने के दिन तक जंगलों में रहा।'' जंगल मृत सागर के पश्चिम में यहूदिया का ही क्षेत्र था।

सारांश

स्वर्गदूत मनुष्यों को दर्शन देते थे। लोगों को बोलने के लिए परमेश्वर के आत्मा द्वारा प्रेरित किया जाता था। चार सौ वर्ष की खामोशी[38] टूट चुकी थी! ''समय पूरा हुआ'' (गलतियों 4:4) था! मसीह आ रहा था!

मसीहा के जन्म का पूर्वानुमान लगाने वालों की उत्सुकता देखें। इस खबर से कि यीशु आ रहा है, वे आनन्दित हुए। जब कोई आप से कहे कि ''वह आ चुका है और जीवित है'' तो ज़्या आप रोमांचित होते हैं? इस कहानी के बार-बार सुनने का अर्थ यह न हो कि आपके दिमाग पर इसका असर ही कम होने लगे।

अगले पाठ में हम यीशु के जन्म पर ध्यान लगाएंगे।

टिप्पणियां

[1]पुस्तक में आरज़्भ में संक्षिप्त टिप्पणियां लूका 1:1-4 में दी गई हैं। [2]पुस्तक के आरज़्भ में विलक्षण परिचय के लिए यूहन्ना के तर्क की चर्चा यूहन्ना की पुस्तक पाठ में की गई है। [3]सृष्टिकर्ज़ा के रूप में यीशु के सज़्बन्ध में, देखें यूहन्ना 1:10; 1 कुरिन्थियों 8:6; कुलुस्सियों 1:16, 17; इब्रानियों 1:2. [4]कुछ लोग यीशु को ''यहोवा के दूत'' से जिसका उल्लेख पुराने नियम में कई बार हुआ है, मिलाते हैं (उत्पज़ि 16:7)। यह स्पष्ट नहीं है कि वह स्वर्गदूत एक ही होता था या नहीं। यदि एक ही होता था, तो भी इसका कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं है कि यह अलौकिक जीव ''परमेश्वरत्व'' का दूसरा सदस्य ही था। [5]*लोगोस* यूनानी शज़्द है, जिसका अनुवाद यूहन्ना 1:1, 14 में ''वचन'' या ''शज़्द'' हुआ है। यह वही शज़्द है, जिससे अंग्रेज़ी का ''logic'' शज़्द बना है। इसका इस्तेमाल अन्य शज़्दों के मेल में भी किया जाता है, जिसका अर्थ ''का अध्ययन'' है, जैसे ''बायो *लॉजी*'' (जीवन का अध्ययन)। यूहन्ना प्रेरित ने यीशु के बारे में बताने के लिए अन्य लेखों में भी *लोगोस* का ही इस्तेमाल किया (देखें 1 यूहन्ना 1:1; प्रकाशितवाज़्य 1:2; 19:13)। मसीह के बारे में बताने के लिए इस शज़्द का इस्तेमाल करने वाला नये नियम का वही अकेला लेखक है। [6]KJV और हिन्दी में ''सांसारिक'' शज़्द का अर्थ देने के लिए प्राय: ''शारीरिक'' इस्तेमाल हुआ है (रोमियों 7:14)। [7]यूहन्ना 3:19-21 भी देखें। [8]आत्मिक जन्म के विचार को यूहन्ना 3 में विस्तार दिया गया है। [9]केन गाइर, *मोमेंट्स विद द सेवियर* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ॉन्डर्वन पज़्लिशिंग हाउस, 1998), 18. [10]मज़ी की सूची की पुराने नियम की वंशावलियों के साथ तुलना करने पर यह देखा जाएगा कि कई नाम छोड़ दिए गए हैं। उदाहरण के लिए, मज़ी 1:8 कहता है कि ''योराम से उज़िय्याह उत्पन्न हुआ,'' परन्तु उज़िय्याह वास्तव में योराम का लकड़-पोता था (देखें 2 राजा 8:25; 13:1; 14:1, 21)। हम पज़्का नहीं कह सकते कि इन लोगों का नाम ज़्यों नहीं दिया गया। वे बुरे लोग थे, परन्तु जिनका नाम दिया गया है, वे भी तो बुरे थे। दो बातें ध्यान में रखें: (1) यहूदी लोग वंशावली बताने में अधिक विश्वास रखते थे, न कि उस वंशावली के हर व्यज़्ति का नाम शामिल करने में। (2) यहूदी लोग ''स्वच्छ'' सूचियों को पसन्द करते थे।

[11]एफ़. लेगर्ड स्मिथ, *द नैरेटड बाइबल इन क्रोनॉलोजिकल ऑर्डर* (यूजीन, ओरिगन: हार्वेस्ट हाउस पज़्लिशर्स, 1984), 1353. [12]गायर, 19. [13]इसका एक अपवाद ज़रुज़्बाबिल हो सकता है (मज़ी 1:12; लूका 3:27), यद्यपि कुछ लोग यह नहीं मानते कि इन दोनों सूचियों वाले ज़रुज़्बाबिल एक ही हैं। [14]यीशु यूसुफ का *कानूनी* पुत्र था न कि उसका *खूनी* पुत्र। यीशु का पिता केवल परमेश्वर था। [15]यीशु की वंशावली को देखने के इन दो ढंगों को कई बार *लीगल* लाइन (यूसुफ के द्वारा) और *रीगल* (शाही) लाइन (मरियम के द्वारा) के रूप में अलग किया जाता है। [16]*एज़्लेसियेस्टिकल हिस्टरी* 1.7. [17]इस पुस्तक में मज़ी और लूका की

पुस्तकों में दिए जाने वाले ज़ोर की चर्चा देखें। [18]इसका कारण यह हो सकता है कि, साधारणतया यहूदी लोग वंशावलियों में स्त्रियों को शामिल *नहीं* करते थे। स्त्रियों का उल्लेख कभी-कभी हुआ हो सकता है (मत्ती 1:3, 5), परन्तु वंश पुरुषों से ही चलता था। [19]कुछ अनुवादों में ''एली'' है, जबकि कई अनुवादों में ''हेली'' है। ये एक ही नाम को अलग-अलग तरह से पुकारने के दो ढंग हैं। [20]ए.टी. रॉबर्टसन, *ए हारमनी ऑफ़ द गॉस्पल्स फ़ॉर स्टूडेंट्स ऑफ द लाइफ़ ऑफ क्राइस्ट* (न्यूयॉर्क: हार्पर एण्ड रोअ, 1950), 261. ''पुत्र'' से संकेत मिल सकता है कि ''की सन्तान'' (देखें मत्ती 1:1)। बाइबल में ''पुत्र'' का एक और सज़्भावित अर्थ ''दामाद'' है। कुछ लोग अनुमान लगाते हैं कि एली की केवल बेटियां ही थीं, जिसका यह अर्थ था कि दामाद पुत्र की तरह वारिस हो सकता था (देखें गिनती 27:1-11; 36:1-13)।

[21]इस पुस्तक में आगे मसीह की वंशावली का विवरण देखें। जैसा पहले एक टिप्पणी में सुझाव दिया गया था, इस सूची में वर्णित ज़रुज़्बाबिल नाम का आदमी एक हो भी सकता है और नहीं भी। [22]मूसा के निर्देशों के अनुसार, याजक होने के लिए पहले महायाजक, हारून की सन्तान में से होना आवश्यक था (निर्गमन 28:1)। [23]बाइबल में जिब्राइल (लूका 1:19, 26; देखें दानिय्येल 8:16; 9:21) और मीकाइल (यहूदा 9; प्रकाशितवाज़्य 12:7; देखें दानिय्येल 10:13, 21; 12:1) केवल दो ही स्वर्गदूतों के नाम दिए गए हैं। [24]''स्वर्गदूत'' शज़्द यूनानी भाषा के उस शज़्द का लिप्यंतरण है, जिसका अर्थ मूलत: ''दूत'' है। [25]जिब्राइल ने अपनी भविष्यवाणी में यह घोषणा की थी कि ''दाखरस और मदिरा कभी न पीयेगा'' (लूका 1:15)। इसकी तुलना गिनती 6:2, 3 से करें। स्पष्टतया यूहन्ना जन्म से नाज़ीर नहीं था। और लोग जो जन्म से नाज़ीर थे, वे शिमश्सोन (न्यायियों 13:3-7) और शमूएल (1 शमूएल 1:11) थे। [26]जिब्राइल ने उस अग्रदूत की एक भविष्यवाणी, मलाकी 4:5, 6 से उद्धृत की। [27]यह मानने पर कि मरियम जिब्राइल की घोषणा के शीघ्र बाद गर्भवती हो गई, यह निष्कर्ष निकलेगा कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला यीशु से लगभग छह महीने बड़ा था। [28]पहली शताज़्दी के यहूदी इतिहासकार जोसेफस ने गलील के 204 नगरों या उपनगरों का उल्लेख किया है, परन्तु नासरत का कोई हवाला नहीं दिया (जे. डज़्ल्यू. मैज़र्वे एण्ड फिलिप वाई. पेंडलेटन, *द फ़ोरफ़ोल्ड गॉस्पल ऑर ए हारमनी ऑफ़ द फ़ोर गॉस्पल्स* [सिंसिनटी: स्टैंडर्ड पज़्लिशिंग कं., 1914], 14)। तालमुड में त्रेसठ गलीली नगरों का उल्लेख है, परन्तु नासरत का नहीं। [29]सामान्यतया, विवाह का समारोह मंगनी के समारोह के लगभग एक वर्ष बाद होता था। [30]व्यवस्थाविवरण 22:23, 24 पढ़ें। इससे पता चल जाता है कि यह पता चलने पर कि मरियम गर्भवती है, उसका ज़्या हाल हुआ होगा (मत्ती 1:18, 19)।

[31]प्रेरितों 13:6 पढ़ें। (''बार-यीशु'' का अर्थ है ''यीशु का पुत्र।'') ''यीशु'' आज भी कुछ समाजों में एक सामान्य नाम है। (भारत में एक प्रसिद्ध गायक है, जिसका नाम ''येसु'' दास है-अनुवाद)। [32]लूका 1:27 में ''कुंवारी'' (*parthenos*) के लिए सामान्य यूनानी शज़्द था। आयत 34 में मरियम ने मूलत: यही कहा था कि ''मैं तो पुरुष को जानती ही नहीं।'' पवित्र शास्त्र इस बात में कोई संदेह नहीं रहने देता कि स्वर्गदूत द्वारा दर्शन देने के समय मरिमय कुंवारी थी। [33]दिए गए कारण जॉन फ्रैंज़्लिन कार्टर, *ए लेमैन'स हारमनी ऑफ़ द गॉस्पल्स* (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1961), 41-42 से लिए गए हैं। [34]अतिरिज़्त जानकारी के लिए ''परमेश्वर ने मरियम को ज़्यों चुना'' पाठ देखें। [35]मरियम के शज़्दों को कई बार *मरियम का भजन* कहा जाता है, जो भाषा में प्रभु को ऊंचा करने के भजन का पहला शज़्द है। [36]स्पष्टतया, वह यूहन्ना के जन्म से कुछ समय पहले ही चली गई थी। शायद वह जन्म के लिए आने वाले इलिशबा के रिश्तेदारों को अपने गर्भवती होने के बारे में पूछे जाने वाले सवालों का जवाब नहीं देना चाहती थी। (वे मरियम के भी रिश्तेदार होंगे।)। [37]उस जमाने में खतने के समय लड़के का नामकरण करने की प्रथा थी (देखें लूका 2:21)।